RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

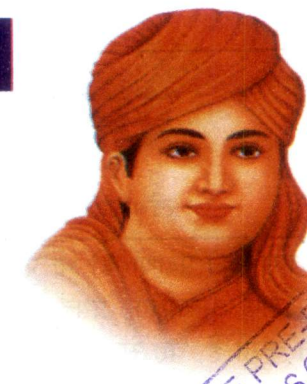

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष : 74 अंक : 11
सृष्टि संवत् 1960853118
11 जून, 2017
दयानन्दाब्द 193
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–74, अंक : 11, 8–11 जून 2017 तदनुसार 29 ज्येष्ठ सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आत्मयुक्त आकाश के दोहन से अमृत पैदा होता है

–ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

आत्मन्वन्नभो दुह्यते घृतं पय ऋतस्य नाभिरमृतं वि जायते।
समीचीनाः सुदानवः प्रीणन्ति तं नरो हितमव मेहन्ति पेरवः।।
–ऋ० ९।७४।४

शब्दार्थ–आत्मन्वत् + **नभः** = आत्मयुक्त आकाश से **घृतम्** = दीप्तियुक्त **पयः** = अमृत जल **दुह्यते** = दोहा जाता है, उससे **ऋतस्य** = ऋत का **नाभिः** = सम्बन्धी, मूल **अमृतम्** = अमृत **वि+ जायते** = विशेषरूप से उत्पन्न होता है। **समीचीनाः** = उत्तम चाल–चलन वाले **सुदानव :** = श्रेष्ठ दानी **महानुभाव तम्** = उसको **प्रीणन्ति** = तृप्त करते हैं। **पेरवः** = ज्ञानी **नरः** = मनुष्य **हितम्** = हित को **अव** + **मेहन्ति** = **नीचे बरसाते हैं।**

व्याख्या–आत्मयुक्त आकाश से अमृत बरसने की बात को तैत्तिरीयोपनिषत् में सङ्केत से कहा है–

स. य एषोऽन्तर्हृदय आकाशः। तस्मिन्नयं पुरुषो मनोमयः, अमृतो हिरण्मयः। **–तैत्तिरीयोपनिषत् १।६।१**

यह जो हृदय में आकाश है, उसमें यह मनोमय पुरुष = आत्म है, जो अमृत तथा ज्योतिर्मय है। हृदय के भीतर का आकाश आत्मा का निवासस्थान है और वही है परमात्मा की उपलब्धि का मन्दिर। छान्दोग्योपनिषत् [८।१।१] में हृदयाकाश के भीतर रहने वालों की खोज का आदेश दिया है और कहा है कि वह आकाश इतना महान् है कि इसमें समस्त संसार समाया है और कि यह शरीर–नाश के साथ नष्ट नहीं होता। यह आत्मा ''**अपहतपाप्मा विजरो** [अजर] **विमृत्युः** [अमर] **विशोको** [शोकरहित] विजिघत्सो [क्षुधारहित] **अपिपासः** [प्यास से शून्य] **सत्यकामः** [सत्य सङ्कल्प] है।'' हृदय के भीतरी आकाश में रहने वाले इस आत्मा = परमात्मा का निरूपण करके आत्मज्ञान का महात्म्य वर्णन किया है। प्रतिदिन प्रतीत होते हुए इस अन्तरात्मा के प्रत्यक्ष न होने का हेतु बताकर कहा–**'अथ य एष सम्प्रसादोऽस्माच्छरीरात् समुत्थाय परं ज्योतिरुपसम्पद्य स्वेन रूपेणाभिनिष्पद्यत एष आत्मेति होवाच एतदमृतमभयमेतद् ब्रह्मेति'** (८।३।४) और यह जो सम्प्रसाद = जीवात्मा इस शरीर से निकलकर परमज्योति को प्राप्त होकर अपने स्वरूप में निष्पन्न होता है, यही आत्मा है, यही अमृत है, यही अभय है, यही ब्रह्म है।

इसी बात को मन्त्र में थोड़े–से शब्दों में कहा है–**'आत्मन्वन्नभो दुह्यते घृतं पयः'** = आत्मयुक्त आकाश से [हृदयाकाश से] प्रकाशयुक्त अमृत दोहा जाता है। वह अमृतरस का मूल है। कहा है–**'ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत'** (ऋ १०।१९०।१) = ऋत और सत्य उसके प्रदीप्त उज्ज्वल तप से उत्पन्न हुए। इस अमृत से हर कोई तृप्त नहीं हो पाता, वरन **'समीचीनाः सुदानव प्रीणन्ति तम्'** = अच्छे चाल–चलन वाले तथा उत्तम दानी उसे प्रसन्न कर पाते हैं, क्योंकि ऐसे, **'नरो हितमव मेहन्ति पेरवः'** = ज्ञानी नर हित की वृष्टि बरसाते हैं। जिन्हें इस आत्मतत्त्व का बोध नहीं है, ज्ञानी जन उन पर ज्ञानामृत की वृष्टि करते हैं। मन्त्र में साधक की उस अवस्था का वर्णन है, जब वह ब्रह्मामृतरस पान करने लग जाता है। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

वैदिक भारत–कौशल भारत
आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत–कौशल भारत **5 नवम्बर 2017** रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय–समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

–प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

यज्ञशेष से शक्ति और शान्ति पावें

-ले० डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद उ. प्र. भारत चलभाष ०९३५४७४५४२६

हम जिन पदार्थों को भी पोषण के लिए अत्यधिक प्रयत्न करके प्राप्त करते हैं, वह सब प्रभु आदेश से ही पाते हैं। यह एक प्रकार से यज्ञशेष है जिसे हम शान्ति तथा शक्ति स्थापना के लिए ग्रहण करते हैं। इस बात की ओर यह मन्त्र इस प्रकार संकेत कर रहा है :

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽ-श्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

अग्नये जुष्टं गृह्णाम्यग्नी-षोमाभ्यां जुष्टं गृह्णामि।। यजुर्वेद १.१०।।

१. सर्वज्ञ प्रभु दयालु भी हैं : परम पिता परमात्मा जो सर्वज्ञ हैं, सब से ऊपर हैं तथा जो कुछ भी हम देखते हैं वह सब उस प्रभु के कारण ही सम्भव है। वह प्रभु दयालु भी हैं। हम सब पर दया करते हैं। उस प्रभु की दया के कारण ही हमें सूर्य व चांद से प्रकाश मिलता हमें शक्ति वर्धक व आनन्द देने वाले वनस्पतियां, फल व फूल मिलते हैं। उस प्रभु ने हम पर दया करते हुए हमें कर्म करने में स्वतन्त्र बनाया है किन्तु किये हुए कर्मों का फल उस प्रभु ने हम पर दया करते हुए अपने पास रख लिया है ताकि हम किसी पर भी अत्याचार न करें, निरंकुश हो कर दूसरों को परेशान न करें।

२. प्रभु पूर्ण के सब कार्य भी पूर्ण : प्रभु के इन गुणों के कारण इस में कुछ भी अपूर्णता नहीं है तथा न ही इस कारण कुछ भी दुःखद है। इस का स्पष्ट कारण है कि वह प्रभु पूर्ण है। पूर्ण प्रभु जो भी काम करता है, वह सब भी पूर्ण ही होते है।

३. प्रभु की कृति दुःख कारक नहीं : इतना ही नहीं प्रभु की बनाई कोई भी वस्तु दुःख का कारण नहीं होती। पिता जो कुछ भी बनाता है, वह सब हमारी सुख सुविधाओं को बढ़ाने के लिए होता है। इस कारण उस पिता की बनाई कोई भी वस्तु हमारे लिए दुःखकारी नहीं होती। यदि कुछ दुःख कारक है भी तो उस का कारण हम स्वयं ही होते हैं। हम उस के प्रयोग में अथवा रख रखाव में कुछ भूल कर देते हैं।

४. जीव अल्पज्ञ : दूसरे शब्दों में जीव अल्पज्ञ है और अपनी इस अल्पज्ञता के कारण अथवा व्यसनों के आधीन हम वस्तुओं का ठीक से प्रयोग नहीं कर पाते। इस कारण अनेक बार यह वस्तुएं हमारे लिए दुःख का कारण बनती हैं। इस कारण प्रभु-भक्त पांच प्रकार के निर्णयों के आधार पर यह निश्चय करता है कि-

(क) मैं मध्य मार्गी बनूं : प्रभु कहते हैं कि हे जीव ! मैंने संसार के प्रत्येक पदार्थ को, प्रत्येक वस्तु को तेरे ग्रहण करने के लिए पैदा किया है। प्रभु उत्पादक है किन्तु उसने जो कुछ भी पैदा किया है, वह प्रभु स्वयं उसमें से कुछ भी उपभोग नहीं करता। जो कुछ भी पैदा करता है वह हम जीवों के उपभोग के लिए ही पैदा करता है। पमपिता यह आदेश करते हैं कि हे जीव ! मैंने जो कुछ भी बनाया है वह तेरे लिए ही बनाया है किन्तु इस के लिए यह आवश्यक है कि इन सब का प्रयोग करते हुए इस बात का ध्यान रहे कि इनका प्रयोग अत्यधिक न हो, अकारण इन का प्रयोग न करें या दूसरों की हानि के लिए न हो अर्थात् ठीक आवश्यकता के अनुसार हो। न तो अति हो तथा न ही अयोग, बस सब का प्रयोग यथायोग्य ही, संतुलित ही करना होगा। गीता ने भी पिता के इस आदेश पर ही अपने विचार दिये हैं कि हम युक्त आहार, विहार वाले रहते हुए सदा मध्य मार्ग पर ही चलें।

(ख). पुरुषार्थ से ही कुछ ग्रहण करें : मानव जीवन के आधार दो साधन हैं। इन में से एक को प्राण कहते हैं तथा दूसरे को अपान कहते हैं। जब हम वायु को श्वास द्वारा अन्दर को लेते हैं तो यह प्राण है तथा जब इसे बाहर को छोड़ते हैं जो इस क्रम को अपान कहते हैं। मन्त्र कहता है कि प्राणापान द्वारा अर्थात् मेहनत के द्वारा, पुरुषार्थ के द्वारा अपने बाहुओं से यत्न पूर्वक प्राप्त पदार्थ को ही हम ग्रहण करते हैं। प्रभु इस के माध्यम से स्पष्ट आदेश दे रहे हैं कि हम प्रतिदिन, सदा अत्यधिक मेहनत करें तथा उस वस्तु का ही हम अपने लिए उपभोग करें, जो इस पुरुषार्थ के परिणाम स्वरूप हमें प्राप्त होती है। यह मन्त्र पुरुषार्थी जीवन पर ही बल देता है।

(ग). पोषण के लिए वस्तु ग्रहण करो : मन्त्र यहां कह रहा है कि हम किसी भी वस्तु को जीभ के स्वाद मात्र के लिए प्रयोग न करें। इस के साथ ही मन्त्र यह भी सन्देश, उपदेश व आदेश दे रहा है कि हम किसी भी वस्तु का अपने सौन्दर्य के लिए ही प्रयोग न करें। इस सब से अलग करते हुए यहां प्रभु आदेश दे रहे हैं कि हम जिस वस्तु का भी प्रयोग करें, उपभोग करें, उस का उपयोग अपने पोषण को बढ़ाने के लिए होना चाहिये। इससे स्पष्ट होता है कि प्रभु न तो सौन्दर्य तथा न ही स्वाद को पसन्द करते हैं। इन सब से उत्तम पोषण, शक्ति ही होती है। इसलिए प्रभु हमें केवल उस वस्तु का ही प्रयोग करने को कहते हैं, जो हमारे स्वास्थ्य के लिए उत्तम हो, जो हमारी जीवनीय शक्ति को बढ़ाने वाली हो अथवा पोषक हो।

(घ). यज्ञ शेष रूपी अमृत को प्राप्त करें : परमपिता परमात्मा मन्त्र के इस अन्तिम भाग में इस प्रकार उपदेश कर रहे हैं कि हे जीव ! तेरे अन्दर जो शक्ति है, उसे मैं अग्नि के नाम से जानता हूं, वह अग्नि ही है। अग्नि से युक्त वस्तु ही हमारी शक्ति को बढ़ाने वाली होती है। अग्नि गर्मी देती है। जब मानव शरीर से गर्मी समाप्त हो जाती है तो उसका जीवन समाप्ति को ही ग्रहण करता है। इसलिए कहा है कि हे प्रभु ! हमारे अन्दर वह शक्ति दो, जो अग्नि को बढ़ाने वाली हो।

(ङ). यज्ञशेष का ही सेवन करें : अग्नि ही यज्ञ का रूप है। परोपकार का ही नाम यज्ञ है, दूसरों की सहायता का नाम ही यज्ञ है। इसलिए प्रभु कहते हैं कि अपनी प्रत्येक क्रिया को यज्ञ की भावना के अनुरुप बना कर ही करें। दूसरों के हित के लिए ही करें। इस प्रकार यज्ञ करने के पश्चात् जो कुछ शेष बचता है, उसे यज्ञ शेष कहते हैं। प्रभु उपदेश कर रहे हैं कि हम केवल यज्ञ शेष का ही सेवन करें। दूसरों को खिलाने के बाद ही हम कुछ खावें, ग्रहण करें।

५. यज्ञ शेष का सेवन करें : प्रभु बताते हैं कि दूसरों को खिलाने के पश्चात् जो शेष बच जाता है, उसे ही यज्ञ शेष कहते हैं। हवन करने के पश्चात् जो बचता है, उस घी व सामग्री को ही यज्ञ शेष कहते हैं। इस प्रकार का आहार पुष्टि का कारण होता है क्योंकि यह ही यज्ञ शेष होता है। यह ही यज्ञ का प्रसाद होता है। इस कारण यह अमृत है।

६. अग्नि व सोम के लिए सेवित वस्तु ग्रहण करें : प्रभु उपदेश करते हैं कि हम उस वस्तु को ही ग्रहण करें जो अग्नि से अर्थात् तेज से, पुरुषार्थ से सेवित हो या यूं कहें कि जो अग्नि तथा सोम के लिए सेवित हों। अग्नि तेज को कहते हैं तथा सोम शरीर की विभिन्न शक्तियों को कहते हैं। जो वस्तु इन को बढ़ाने वाली हों, उनको ही ग्रहण करना उत्तम होता है। इसलिए पिता उपदेश करते हैं कि हम अग्नि और सोम को बढ़ाने वाली वस्तुओं का ही सेवन करें, उपभोग करें।

मन्त्र बता रहा है कि हमारे जीवन के तत्वों में दो मुख्य तत्व हैं :

(अ) अग्नि (आ) सोम

आयुर्वेद हमारे सब भोज्य पदार्थों को अर्थात् हमारे भोजन को दे भागों में बांटता है

(य) आग्नेय हमारे भोजन के जिस अंश को आग्नेय कहते हैं, यह हमें शक्ति देने वाला होता है।

(र) सौम्य भोजन के लिए जिस भाग को सोम्य कहते हैं, यह भाग न केवल हमें शान्ति ही देता है बल्कि दीर्घायु अर्थात् लम्बी आयु भी देने वाला होता है।

स्पष्ट है कि लम्बी आयु उसको ही मिलती है जो शक्ति देने वाले अर्थात् आग्नेय पदार्थों से युक्त भोजन को करता है तथा शान्त रहता है। इसलिए प्रभु उपदेश करते हैं कि हे जीव ! तू ऐसा भोजन कर जिस में आग्नेय तथा सोम्य, यह दोनों तत्व ही उपयुक्त मात्रा में विद्यमान हों। जब तू ऐसा भोजन करेगा तो तेरा जीवन अनेक प्रकार के रसों से आनन्दों से भर जावेगा।

सम्पादकीय.....

गौहत्या भारतीय संस्कृति के ऊपर कलंक

पिछले दिनों केन्द्र द्वारा पशुओं की खरीद फरोख्त पर पाबन्दी लगाने के फैसले के विरोध में केरल में कुछ युवा कांग्रेस के कार्यकर्ताओं द्वारा सरेआम कैमरे के सामने गाय काटकर और सड़क के ऊपर उसका मांस पकाकर भारतीय संस्कृति को शर्मसार किया है। जिस देश में गाय को माता का दर्जा दिया गया है, जिस देश के लोग अपने घर में पहली रोटी गाय के लिए रखते हैं उसी देश में गाय की निर्मम हत्या हमारी संस्कृति के ऊपर कलंक है। अंग्रेजों के शासनकाल में हुए 1857 की क्रान्ति का एक मुख्य कारण यह भी था कि हमारे सैनिकों ने गाय की चर्बी लगे कारतूसों का इस्तेमाल करने से मना किया था और विद्रोह किया था। आज स्वतन्त्र भारत में हुई इस अमानवीय घटना ने हमारी संस्कृति और राष्ट्र का सिर शर्म से झुका दिया है। सरकार को चाहिए कि ऐसे देशद्रोही, संस्कृति के घातक दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दें ताकि भविष्य में इस प्रकार की कोई जघन्य घटना न हो। पिछले कुछ दिनों से इस फैसले के विरूद्ध चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ है। कोई प्रदर्शन कर रहा है, कुछ नेता धमकी दे रहे हैं कि अगर केन्द्र सरकार ने इस फैसले को नहीं बदला तो देश में गृह युद्ध जैसे हालात होंगे। हमारे देश का दुर्भाग्य है कि ऐसे लोग इस देश के नेता हैं जिन्हें अपनी संस्कृति और सभ्यता का ज्ञान तक नहीं है।

भारतीय संस्कृति का मूल आधार वेद हैं। इस लेख में वेदों के आधार पर यह दिखाया है कि हमारी संस्कृति कभी भी गाय की हत्या करने का आदेश नहीं देती। भारतीय संस्कृति और चिन्तन परम्परा में गौ को अत्यधिक पूजनीय माना गया है। जो गौओं को पालते हैं, उनकी रक्षा करते हैं उनको गाय **भूयो भूयो रयिमिदस्य वर्धयन्** गौधन उन गृहस्थों के ऐश्वर्यों की वृद्धि करता है। इसलिए वेद में स्पष्ट रूप से यह उद्घोषणा की गई है कि गौ माता, पुत्री और बहन के समान अघ्न्या है। ऋग्वेद का मन्त्र है-

माता रूद्राणां दुहिता वसूनाँ स्वसादित्यानाम् तस्यनाभिः।
प्र नु वाचं चिकितुषे जनायमागामानागामदितिं वधिष्ट।।

गौ राष्ट्र के रूद्र, वसु और आदित्य ब्रह्मचारियों की माता, पुत्री और बहिन है। ये अमृत हैं। ऐसी निष्पाप गौ को कभी मत मार। इसलिए गौ को वेद में रक्षा करने योग्य बतलाया है।

इमं साहस्रं शतधारमुत्संव्यच्यमानं शरीरस्य मध्ये।
घृतं दुहानामदितिं जनायाग्ने मा हिंसीः परमे व्योमन्।। यजु.

अर्थात् सैकड़ों तथा हजारों का धारण और पोषण करने वाली दूध का कुआं, मनुष्यों के लिए घृत देने वाली और जो न काटने योग्य गौ है उसकी हिंसा मत कर। महर्षि दयानन्द जी इसी मन्त्र पर भावार्थ में लिखते हैं- जिस गाय से दूध, घी आदि पदार्थ उत्पन्न होते हैं, जिनके द्वारा सभी का रक्षण होता है, ऐसी गौ कभी भी मारने योग्य नहीं है। जो गाय की हिंसा करे उसे राजा दण्ड़ दे। वेद में सभी पशुओं की रक्षा के लिए कहा है। अथर्ववेद में कहा गया है कि क्षत्रिय ब्राह्मण की गौ की रक्षा करे, उसकी हिंसा कभी न करे। गौ को अघ्न्या कहा है। कहने का अभिप्राय यह है कि गौ को कभी नहीं मारना चाहिए। निरूक्त में भी गौ के जो नाम दिए है वे हैं- अघ्न्या, उस्रा, उस्रिया, अही, मही, अदिति, जगती और शक्करी। इन शब्दों में अघ्न्या और अदिति शब्द गौ के अवध्य होने की तथा अही और मही शब्द उसके पूज्य होने की सूचना देते हैं। इसी प्रकार वेद में अनेकों स्थलों पर गौ को अघ्न्या कहा है। जो उसकी रक्षा करता है उसकी प्रशंसा वेद द्वारा की गई है। मारूतं गोषु अघ्न्यं शर्धः प्रशंसः अर्थात् जो मारूत् गौ की रक्षा करते हैं उनके बल की रक्षा करो। इयं अघ्न्या अश्विभ्यां पयः दुहाम् अर्थात् यह अवध्य गौ अश्वि देवों के लिए दूध दे। अघ्न्ये विश्वदानीं तृणं अद्धि अर्थात् हे अवध्य गौ तू सदा घास खा। इसके अलावा और भी शास्त्रों के प्रमाण हैं जहां पर गाय को पूजा के योग्य बताया है। गावो विश्वस्य मातरः अर्थात् गाय सारे संसार की माता है।

दुर्भाग्य से लोग वेद के मार्ग को भूल गए, विद्या आदि से रहित हो गए, वाममार्ग का जोर हुआ उस समय मांस की आहुतियां यज्ञ में दी जाने लगी। वेद से अलग भारतीय साहित्य में भी गौ का महत्व बहुत दर्शाया गया है। जैसा कि महाभारत में वर्णन आया है कि-

यज्ञांगं कथिता गवो यज्ञ एव च वासवः।
एतामिश्च विना यज्ञो न वर्तेत कथंचन।।

भीष्म जी कहते हैं कि वासवः गौओं को यज्ञ का अंग तथा साक्षात् यज्ञस्वरूप कहा गया है। क्योंकि इन के दुग्ध, दधि और घृत के बिना यज्ञ सम्पन्न नहीं होता। महाभारत में भी गौवों को अमृत की खान कहा है। वास्तव में गौ सर्वश्रेष्ठ पशु है, फिर भी मनुष्य पता नहीं उसकी हिंसा क्यों करता है। ये गौवें विकार रहित अमृत धारण करती हैं और दुहने पर अमृत रूपी दूध हमें प्रदान करती हैं। सारा संसार उनके सामने नतमस्तक होता है।

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द जी जो उन्नीसवीं शताब्दी के महान् सुधारक हुए हैं वे गौओं के प्रति अपने उद्गार प्रकट करते हुए करूणास्रोत बहाते हुए गोकरूणानिधि नामक ग्रन्थ में कहते हैं- देखिए जो पशु निःसार घास, तृण पत्ते, फल फूल आदि खाएं और सारा दूध आदि अमृत रत्न देवें, हल गाड़ी में चल के अनेकविध अन्नादि उत्पन्न करके नीरोगता करे, मित्र आदि के समान पुरूषों के साथ विश्वास और प्रेम करें, जिधर चलाए उधर चलें, अपने स्वामी की रक्षा के लिए तन लगावे इत्यादि शुभ गुणयुक्त सुखकारक पशुओं के गले छुरे से काट कर जो अपना पेट भरकर अपनी व संसार की हानि करते हैं, क्या संसार में उनसे अधिक कोई विश्वासघाती, अनुपकारी दुःख देने वाले पापीजन होंगे? गोकरूणानिधि में महर्षि दयानन्द गौ का आर्थिक दृष्टि से लाभ गिनाते हुए लिखते हैं कि- इस गाय के पीढ़ी में छः बछिया और सात बछड़े हुए इनमें से एक रोग आदि से मृत्यु सम्भव है तो भी बारह शेष रह जाते हैं। उन बछियों के दूध मात्र से १५४४४० व्यक्तियों का पालन हो सकता है। अब रहे छः बैल उनमें एक जोड़ी से २०० मन अन्न उत्पन्न हो सकता है। इस प्रकार तीन जोड़ी ६०० मन अन्न उत्पन्न कर सकती है। प्रत्येक मनुष्य का तीन पाव भोजन गिने तो २५६००० मनुष्यों को एक बार भोजन होता है। इन गायों को परपीढ़ियों का हिसाब लगाकर देखा जाए तो असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है और इसके मांस से अनुमान है कि अस्सी मासांहारी मनुष्य तृप्त हो सकते हैं।

भारतीय इतिहास में आर्य राजाओं के यहां तो गौ रक्षा होती ही थी। इतिहास प्रसिद्ध रघुवंशी महाराजा दिलीप ने शेर के सामने गौ की रक्षा के लिए अपने आपको प्रस्तुत किया। तभी तो उस समय का भारत समस्त संसार का गुरू कहलाता था। मनु महाराज की यह घोषणा कि पृथ्वी के सभी मानव भारत में शिक्षा लेने आते थे। वह युग कितना सुन्दर रहा होगा, इसका कारण गौ का सात्विक दूध और गौ रक्षा का ही फल था। आज भारत में भी गौओं का मांस बेचकर खाया जा रहा है फिर भी दाने-दाने के लिए दूसरे देशों पर निर्भर है। महर्षि दयानन्द जी ने गोकरूणनिधि में ठीक ही कहा है कि गौ आदि पशुओं के नाश से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है।

केरल में हुई इस अमानवीय, जघन्य और हमारी संस्कृति को शर्मसार करने वाली निन्दनीय घटना की आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब घोर निन्दा करती है और साथ ही सरकार से यह मांग करती है कि इस कृत्य के दोषी लोगों को कड़ी से कड़ी सजा दे। इस प्रकार की घटनाएं हमारी संस्कृति और सभ्यता के लिए कलंक हैं। राजस्थान हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस ने गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने का जो सुझाव दिया है उसके ऊपर विचार करना चाहिए और गौहत्या को रोकने के लिए कठोर दण्ड़ का प्रावधान करना चाहिए।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

महर्षि दयानन्द की कुछ उपयोगी बातें

–ले० पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्दि राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (ढो तल्ला) कोलकत्ता-700007

१. जब मनुष्य उत्तम गुणों से युक्त होता है, तब सब लोग सब प्रकार से उसका सम्मान करते हैं।

२. जो जितना अपराध करे, उसके उतना दण्ड और जो जितना अच्छा काम करे, उसको उतना ही पारितोषिक देना। अधिक या न्यून नहीं, चाहे माता-पिता भी क्यों न हों।

३. जब बुरे बुराई नहीं छोड़ते तो भले भलाई क्यों छोड़ें।

४. दुष्ट दुर्व्यसनों में फंस जाने से मर जाना अच्छा है।

५. अपने अंश को न छोड़े और पराये अंश को कभी स्वीकार न करें।

६. हारे हुए शत्रु की प्रतिष्ठा कभी न करे, किन्तु उसका यथायोग्य मान्य रखे। परन्तु उसको छोड़कर स्वतन्त्रता कदाचित न देवें। जैसे पृथ्वीराज चौहान ने, मोहम्मद गोरी को कई बार छोड़कर अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारी।

७. अपराध में जनता से राज-पुरूषों पर अधिक दण्ड होना चाहिए। क्योंकि बकरी के प्रमाद रोकने से सिंह के प्रमाद रोकने में अधिक प्रयत्न होना उचित है।

८. सर्वदा सन्तानों की शिक्षा में धन का व्यय करें किन्तु विवाह, मृत्यु आदि में न करे।

९. यह निश्चय है कि जैसा शील आचरण और पुरूषार्थ प्रधान पुरूष करता है, वैसा ही इतर जन बर्तते हैं।

१०. जितना कुछ व्यवहार संसार में है, उसका आधार गृहस्थाश्रम है। ब्रह्मचारी, वानप्रस्थ, और संन्यासी तीन आश्रमों को दान और अन्नादि से प्रतिदिन गृहस्थ ही धारण करता है, इससे गृहस्थ ज्येष्ठ व श्रेष्ठ आश्रम है।

११. विद्वानों का यही काम है कि सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण, असत्य का त्याग करके, परम आनन्दित होते हैं। वे ही गुणग्राहक पुरूष विद्वान होकर धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष रूप फलों को प्राप्त होकर प्रसन्न रहते हैं।

१२. जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और अन्नादि पदार्थ सब के लिए बनाए हैं, वैसे वेद भी सब के लिए सृष्टि के आदि में चार ऋषियों जिनके नाम अग्नि, वायु, आदित्य व अंगीरा थे उनके मुख से चार वेद जिनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद है, क्रमशः उच्चारित करवाये हैं। जिसको पढ़ने-पढ़ाने से कुछ भी न आवे, वह निर्बुद्धि और मूर्ख होने से शूद्र कहलाता है। मनुष्य के तीन शत्रु होते हैं, प्रथम अज्ञान द्वितीय अन्याय तृतीय अभाव। इन तीन शत्रुओं को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अपने-अपने कार्यों से पराजीत करते हैं। जो इन तीनों कार्यों को नहीं कर सकता, उसको इन तीनों वर्णों की सेवा करने का भार सौंपा हैं जिससे ये तीनों वर्ण अपने-अपने कार्यों को आसानी से कर सकें। वैसे अन्य धार्मिक व समाजिक कार्यों के करने का शूद्र को भी समान अधिकार है।

१३. संसार में जितने दान हैं, अर्थात् जल, अन्न, गौ, पृथ्वी वस्त्र, तिल, सुवर्ण और घृत आदि इन सब दानों में वेद विद्या का दान सर्वश्रेष्ठ हैं।

१४. जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं, तभी तक राज्य बढ़ता है और जब दुष्टाचारी होते हैं, तब नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है।

१५. जो-जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ है, उनका सेवन कभी न करें, जैसे अनेक प्रकार के मद्य, भांग, गांजा, अफीम आदि।

१६. जो मनुष्य नित्य प्रातः और सायं सन्ध्योपासना नहीं करता, उसको शूद्रकुल में रख देना चाहिए।

१७. भारत की सब से बड़ी सम्पत्ति उसकी आध्यात्मिक निधि है, अतः सब कुछ खोकर भी उसकी रक्षा अनिवार्य है।

१८. जिसके शरीर में वीर्य सुरक्षित रहता है, तब उसको आरोग्य, बुद्धि, बल, पराक्रम बढ़ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है।

१९. वे माता और पिता अपनी सन्तानों के पूर्ण बैरी है, जिन्होंने इनको विद्या की प्राप्ति नहीं कराई।

२०. जो आकाश के समान-व्यापक, सब देवों का देव परमेश्वर है, उसको जो मनुष्य न जानते न मानते और उसका ध्यान नहीं करते, वे नास्तिक, मन्दमति व सदा दुःख-सागर में डूबे ही रहते हैं।

२१. बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निशंकता और आन्दोत्साह उठता है, वह जीव को आत्मा की ओर से नहीं, परमात्मा की ओर से है।

२२. यह निश्चय है कि जितनी विद्या और मत भूगोल में फैले हैं, वे सब आर्यावर्त्त देश से ही प्रचलित है।

२३. ब्रह्मचर्य जो कि सब आश्रमों का मूल है, उसके ठीक-ठीक सुधारने से सब आश्रम सुगम होते हैं और बिगड़ने से बिगड़ जाते हैं।

२४. धर्म के नाम से बदला लेने की भावना अभद्र है।

२५. परोपकार और पराहित करे समय अपना मान-अपमान और पराई निन्दा का परित्याग करना ही पड़ता है। इसके बिना सुधार नहीं हो सकता।

२६. जो मनुष्य जगत् का जितना उपकार करेगा, उसको इतना ही ईश्वर की व्यवस्था से सुख प्राप्त होगा।

२७. ''सुनने और प्रश्नोत्तर होने के पश्चात् सज्जनों को यही योग्य है कि सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करके स्वयं सदा आनन्दित होकर सबको आनन्दित किया करें।''

२८. सर्वदा सत्य का विजय और असत्य का पराज्य और सत्य ही से विद्वानों का मार्ग विस्तृत होता है। इस दृढ़ निश्चय के अवलम्बन से आप्त लोग परोपकार करने से उदासीन होकर कभी सत्यार्थ प्रकाश करने से नहीं हटते।

२९. सीधा मार्ग वही होता है जिसमें सत्य मानना, सत्य बोलना, सत्य करना, पक्षपातरहित न्याय, धर्म का आचरण करना आदि है और इससे विपरीत का त्याग करना।

३०. उपासना शब्द का अर्थ समीपस्थ होना है। अष्टांग योग से परमात्मा के समीपस्थ होने और उसको सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी रूप से प्रत्यक्ष करने के लिए काम करना होता है, वह सुख करना चाहिए।

बेनीपट्टी (मधुबनी) बिहार के पुलिस विभाग में हुये वेदोपदेश व भजन

विदेहराज जनक की पुत्री महारानी सीता जी का वास्तविक जन्म स्थान नेपाल में है। यह ऐतिहासिक क्षेत्र बार प्रान्त (भारत) की सीमा से लगा होने के कारण समस्त अंचल मिथिला ही कहलाता है। यहाँ मैथिली भाषा बोली जाती है। महर्षि दयानंद अपने बिहार प्रवास में इस क्षेत्र में भी पदार्पण किये थे। अतः यहाँ पर आर्यसमाज का उच्च स्तरीय प्रचार रहा है पर अब सामाजिक विसंगतियों के चलते उसमें काफी कमी आई है। हजारों लोग मांसाहार, बलिप्रथा आदि में फंसे हुए है प्रति वर्ष। आर्य जन प्रचार कार्य करवाते ही है पर इस वर्ष विशेष रूप से होशंगाबाद के आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी व मेरठ के पंड़ित अजय आर्य जी के उपदेश 4-5 स्थानों पर करवाए गए। 19 मई से 26 मई 2017 तक क्रमशः प्रचार कार्यक्रम ग्राम अच्छी, बहेड़ी (दरभंगा) व रैमा (साहरघाट) मधुबनी में रखा गया। आचार्य जी ने अच्छी आर्यसमाज का पुनर्गठन भी किया जिसमें निम्न लिखित महानुभावों को सर्वसम्मति से मनोनीत किया।

प्रधान डॉ० अमरेन्द्र कुमार, उप प्रधान श्री इन्द्रनारायण ठाकुर, श्री उपेन्द्र प्रसाद मंडल, मंत्री श्री रामदेव यादव, उप मंत्री श्री धर्मेन्द्र यादव, श्री रणजीत कुमार लाल, कोषाध्यक्ष श्री रमाकान्त यादव, आर्य वीर दल अधिठाता श्री जयानंद प्रसाद, महिला आर्यसमाज प्रधाना श्रीमती सुनीता देवी, मंत्री श्रीमती श्वेता सुमन, कोषाध्यक्ष श्रीमती रानी कुमारी, आर्य वीरांगना दल पूनम कुमारी एवं पूजा कुमारी।

रैमा के आर्य समाज का प्रोग्राम जो कि माता सूर्यकला देवी जी की पांचवी पुण्य स्मृति में प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। इसका सञ्चालन आचार्य सुशील जी ने किया स्थानीय अनेक मैथिल विद्वानों ने उसमें उपदेश भी दिए। मुख्य आकर्षण तो पंडित अजय जी के भजन व आनंद पुरुषार्थी जी के शास्त्राधारित उपदेश होते थे। पहले ही दिन यज्ञ की यजमान बनी थी सुश्री निर्मला जी मुख्य अतिथि के रूप में भी सम्मिलित हुई। आचार्य श्री पुरुषार्थी जी से चर्चा के उपरांत उन्होंने अपने अनुमंडल कार्यालय के समक्ष उद्यान में पुलिस अधिकारियों में नैतिकता का विशेष भावों को जगाने के लिए एक कार्यक्रम सुबह ८ बजे रख जिसका दीप प्रज्वलन न्यायाधीश श्री वीरेन्द्र कुमार चोबे जी (ए सी जे एम) व पुरुषार्थी जी ने किया।

अखबारों में पर्याप्त कवरेज इसे प्राप्त हुआ। आर्यसमाज मुजफ्फपुर में भी एक दिन रविवार २८ मई को दोनों समय आर्यसमाज मंदिर में प्रोग्राम रखा गया। इस प्रकार १० दिनों का प्रचार कार्य दोनों विद्वानों का पूर्ण हुआ।

सामवेद में राजा-प्रजा का सम्बन्ध

-ले० शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

सामवेद में राजा और प्रजा के आपसी सम्बन्धों पर भी पर्याप्त चिन्तन किया गया है। पूर्वार्चिक प्रथम अध्याय षष्ठी दशति के मंत्र संख्या 1 में कहा गया है कि प्रजा राजा का सम्मान करे और राजा को जीविका तथा रक्षा का दान करे।

इदं ह्यन्वौजमा सुतं राधानां पते।

पिबा त्वा३स्य गिर्वणः।। साम. मं. सं. 165

अर्थ-(राधानाम) धनों के (पते) स्वामी ! राजन् (गिर्वणः) वाणी से प्रशंसा योग्य (ओजसा) परिश्रम से (सुतम्) सिद्ध किये हुए (अस्य) इस सोम के (इदम्) इस भाग को (पिब) पीजिये। (अनु. हि, तु) पादपूरणार्थ है।

मनुष्यों को उचित है कि राजा के लिए सोम रस सिद्ध करके अर्पित करें और राजा उसका पान करे और राजा प्रजा को जीविका तथा सुरक्षा प्रदान करे।

राजा प्रजा के लिए पुत्र के समान है, वह प्रजा का सेवक है।

अभि प्र गोपतिङ्गिरेन्द्रमर्च यथा विदे।

सू नुं सत्यस्य सत्पतिम्।। साम. मं. सं. 168

अर्थ-हे मनुष्य। (स्तपतिम्) सज्जनों के रक्षक और (गोपतिम्) पृथ्वी के स्वामी (सत्यस्य) सत्य के (सूनुम्) पुत्र (इन्द्रम्) राजा को (यथा विदे) जैसा जानता हो वैसा (गिरा) वाणी से (अभि, प्र, अर्च) सब प्रकार सत्कार करे अर्थात् राजा सज्जनों का तथा पृथ्वीस्थ अन्य प्राणियों का रक्षक है, और सत्य न्याय का पुत्र अर्थात् सन्तान के तुल्य सेवक है।

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा।

कया शचिष्ठ्या वृता।। साम. मं. सं. 169

अर्थ-हे राजन्। (कया) किस रीति से तू (नः) हमारा (सखा) मित्र (आभुवत्) होवे ? उत्तर-(उती) रक्षा से। (कया) किस (वृत्ता) कर्म से वा वृत्ति से (चित्रः) विचित्र, गुर्ण, कर्म और स्वभाव होवे ? उत्तर-(शचिष्ठ्या) प्रज्ञा युक्त से। इस प्रकार (सदा वृधः) सर्वदा वृद्धि युक्त होवे।

राजा का कर्त्तव्य है कि प्रजा की जीविका और सुरक्षा उसको प्रदान करे।

आ तू न इन्द्र वृत्रहन्त्स्माकमर्धमाहि।

महान्महीभिरूतिभिः।। साम. मं. सं. 181

अर्थ-(वृत्रहन्) रोकने वालों के हन्त। (इन्द्र) राजन्। (महीभिः) बड़ी (ऊतिभिः) रक्षादिकों सहित (महान्) बड़े आप (अस्माकम्) हमारी (अधर्म) ऋषि को (आगाहि) प्राप्त कराइये (तु) और (नः) हमको (आ) प्राप्त हुजिये।

राजा का प्रेम आपस में कबूतर और कबूतरी के समान होवे।

अयमु ते समतसि कपोत इव गर्भधिम्।

वचस्तच्चिन्न ओह से।। साम. मं. सं. 183

अर्थ-हे राजन्। (ते) आपका (अयम्) यह प्रजाजन (उ) भी (गर्भधिम्) गर्भ धारिणी कबूतरी को (कपोत इव) कबूतर के समान कामना करता हुआ (वचः) प्रार्थना को (चित्) भी (ओहसे) प्राप्त हुजिये, सुनिये। जैसे कबूतर और कबूतरी में अत्यन्त अनुराग होता है वैसे ही न्याय परायण राजा में प्रजा को अत्यन्त अनुराग होता है, होना चाहिए। ऐसा होता है तब राजा प्रजा की पुकार को अवश्य सुनता है। राजा को प्रजा की सुरक्षा के विषय में सदैव सजग रहना चाहिए।

आ तुन्दं वृत्रहा ददे जातः पृच्छाद्विमातरम्।

के उग्राः के हा श्रृण्विरे।। साम. मं. सं. 216

अर्थ-(वृत्रहा) शत्रुहा क्षत्रिय (जातः) यजुर्वेद के ज्ञान से प्रसिद्ध हुआ (तुन्दम्) बाण को (आ ददे) ले और (मातरम्) जननी प्रजा से (वि, पृच्छात्) विचित्र प्रकार से पूछे कि (के) कौन (उग्राः) उपद्रवी है, और (ह) प्रसिद्ध (के) कौन (शृण्विरे) विख्यात है।

क्षत्रिय राजा को योग्य है कि यजुर्वेद में निष्पात होकर धनुष बाण हाथ में लेकर, प्रजा से पूछे कि तुम्हें कौन व्यक्ति उपद्रवी और कौन व्यक्ति प्रख्यात दस्यु जान पड़ते हैं।

मंत्र में राजा को प्रजा का पुत्र बताया गया है।

वृत्रदुक्थं हवामहे सृप्रकरस्नमूतये।

साध कण्वन्तमवसे।। साम. मं. सं. 217

अर्थ-तब प्रजा कहे कि हे राजन्। हम तो (वृत्रदुक्थम्) बड़ी प्रशंसा योग्य (सृपकारस्नम्) प्रलम्ब बाहू (अवसे) रक्षा के लिए (साधः) साधन रूप को (कृण्वन्तम्) कर रूप में कमाने वाले आप की ही (हवामहे) पुकार करती हैं।

अगले मंत्र में राजा को प्रजा का मित्र बताया गया है।

ऋजुनीती नो वरूणो मित्रो नयति विद्वान्।

अर्यमा देवैः सजोषाः।। साम. मं. सं. 218

अर्थ-फिर प्रजा राजा से इस प्रकार प्रार्थना करे कि (वरूण) सहर्ष वरणे योग्य (मित्रः) मित्रता से वर्त्तने वाले (विद्वान्) हमारी अवस्था के जानने वाले (अर्यमा) न्याय करने वाले और (देवैः सजोषाः) विद्वान् मन्त्रियों से प्रीति रखने वाले आप (नः) हमको (ऋजुनीती) सरल नीति से (नयति) शासित कीजिये।

राजा से प्रजा भूमि को सींचित करने के लिए जल की व्यवस्था करने को कहे-

आ नो मित्रा वरूणा घृतैर्गव्यूतिमुक्षतम्।

मध्वा रजांसि सुक्रतू।। साम. मं. सं. 220

अर्थ-हे राजन्। (नः) हमारे लिए (सुक्रतू) शोभन कर्म वाले (मित्रा वरूणा) सूर्यान्तर्गत वृष्टि हेतु देव (घृतैः) जलों से (गव्यूतिम्) उपलक्षित भू भाग पर्यन्त (मधवा) मधुर रस से (रजांसि) धरातलों को (आ उक्षतम् सीचें)

निम्न मंत्र में राजा को पुनः प्रजा का पुत्र कहा गया है।

इन्द्र उक्थेभिर्मन्द्रिष्ठो वाजानां च वाजपतिः।

हरिवांत्सुतानां सखा।। साम. मं. सं. 226

अर्थ-(इन्द्रः) राजा (मन्दिष्ठः) अत्यन्त हृष्ट (च) और (वाजानाम्) बल अर्थात् सेनाओं का (वाजपतिः) सेनापति (हरिवान्) घोड़े आदि का रखने वाला और (सुतानाम्) पुत्र तुल्य प्रजाजनों का (सखा) मित्र तुल्य सहायक (उक्थेभिः) प्रशंसा वचनों के साथ होवे।

निम्न मंत्र में राजा को प्रजा का पिता बताया गया है।

आ याह्युप नः सुतं वाजोभिर्मा हृणीयथाः।

महां इव युवजानिः।। साम. मं. सं. 227

अर्थ-हे राजन्। (युवजानिः) युवती स्त्री वाले आप (वाजेभिः) सेना बल के सहित वर्तमान (नः) हमको (उप आयाहि) प्राप्त हुजिये, हमारी पुकार सुनिये। किसको कौन जैसे ? (सुतम्) पुत्र को (महां इव) पिता आदि बडे के समान। (आहृणीयथाः) क्रोध न करिये।

राजा और प्रजा दोनों एक दूसरे का सम्मान करने वाले हों।

वयं घा ते अपि स्मसि स्तोतार इन्द्र गिर्वणः।

त्वं नो जिन्व सोमपाः।। साम मं. सं. 230

अर्थ-हे वाणी से प्रशंसनीय राजन्। आप सोम के पीने वा रक्षा करने वाले हो और हम प्रजाजन आपके सत्कार करने वाले हैं। इसलिए आप भी हमको प्रसन्न रखिये।

अब एक मंत्र और देकर विषय को विराम देते हैं।

एवा ह्यसि वीर युरेवा शूरा उत स्थिरः।

एवं ते राध्य मनः।। साम. मं सं. 232

अर्थ-हे राजन्। आप (वीरयुः) वीरों को चाहने वाले (एव) निश्चय (असि) हैं। आप (शूरः) शूरवीर (एव) निश्चय हैं (उत) और आप (स्थिरः) दृढ़ (एव) भी हैं। अतः (ते) आपका (मनः) हृदय (राध्यम्) प्रशंसा योग्य है। इति।

ऋत सत्य और सत्य का रहस्य

-पं० उम्मेद सिंह विशारद वैदिक प्रचारक गढ़निवास मोहकमपुर देहरादून

ईश्वर ऋत सत्य है और भूत, भविष्य व वर्तमान का व्यवहार ऋत सत्य में नहीं होता है। वह तीनों कानों के चपेट में नहीं आता है। अत: सत्य शब्द केवल मनुष्य से ही सम्बन्ध रखता है। ईश्वर से नहीं और सत्य सदैव ऋत सत्य की अपेक्षा असत्य होता है। संसार के सारे व्यवहार सत्य के आधार पर होते है वहां संयोग व वियोग अवश्य होता है। परन्तु ईश्वर रूपी ऋत सत्य में संयोग, वियोग नहीं होता है, सदैव संयोग रहता है। अत: वास्तविक सत्य तो ऋत सत्य है। इस संसार में जो जो पदार्थ प्राणीयों के कल्याण के लिये ईश्वर द्वारा प्रदत है उनके गुण कार्य स्वभाव सदैव एक रस रहते हैं वह कभी नहीं बदलते है जैसे सूर्य का प्रकाश, चन्द्रमा की शीतलता, वायु का प्रवाह, अग्नि की उष्णता, जल की प्राणदायिनी शक्ति, धरती की ऊर्जा शक्ति, फलों में खटास, मिठास, उसी में अन्दर बीज की उत्पत्ती तथा ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, स्थिति व प्रलय, प्राणियों में उत्पत्ति में की स्वभाविक प्रवृत्ति, शरीर के इन्द्रियों के गुण कार्य कभी नहीं बदलते, प्राणीयों का जन्म व मृत्यु नियमानुसार, आत्मा की नित्यता, आदि में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में अदृश्य रूप से ऋत सत्य व्यवहार कार्य कर रहा है। इसलिये यह गूढ़ रहस्य हैं। ऋत सत्य द्वारा पदार्थों के गुण हमें सहज में प्राप्त हो रहे है इसलिए उनके प्रति हमारा धन नहीं जाता है। इसलिए जीवन दायिनी पदार्थ ऋत सत्य सदैव हमें प्राप्त है वह ईश्वर द्वारा प्रदत्त है।

सत्य

मानवीय जगत में व्यवहारिक रूप में जो जो कर्म किये जाते है यदि वह कार्य आदान प्रदान में सच्चे है तो वह सत्य है यदि व्यवहार में छल कपट है तो असत्य, है मानवीय जगत में 'कर्म' गुण कर्मानुसार बदलते रहते है। यदि मानवीय व्यवहार में प्रत्येक कर्म को सच्चाई से सत्य के आधार पर किये जाऐ, तो शान्ति बनी रहती है। ईश्वर ने मानव को कर्म करने को स्वतन्त्र रखा है, और सत कर्म और असत्य कर्म मनुष्य के विवेक, पर निर्भर होते है तथा व्यवहारिक सत्य देश काल परिस्थितिनुसार बदलता रहता है।

जरा गहराई से विचार करे तो संसार में जो हमें दीखता है वह असत्य है और जो नहीं दिखता वही सत्य है। जो चलायमान है वह अस्थिर है, परिवर्तनशील है। वास्तव में वह अचलायमान स्थिर तथा अपरिवर्तन शील तत्व के आधार पर टिका हुआ है हर गति तथा अगतिशिलता अचल, स्थिर अपरिवर्तन शील तत्व के कारण टिकी हुई है। जैसे वृक्ष दृष्य है तो बीज अदृश्य है। शरीर दृश्य है तो आत्मा अदृश्य है। इसी प्रकार संसार के प्रत्येक दृश्य परिवर्तन शील है और उसके आधार ईश्वर और उसके गुण अपरिवर्तन शील है। आइए विचार करते है।

आत्म श्रद्धा का आधार सत्य है।

भारतवर्ष का इतिहास बताता है कि महाभारत काल के बाद ईश्वरीय धर्म वेदानुकूल प्राचीन पद्धति के अनुसार, सत्य पर आधारित मान्यताओं को सदैव के लिये प्रचारित करने के लिये एक सत्य का मंच आर्य समाज के संस्थापक, एक मात्र महर्षि दयानन्द सरस्वती जी थे। उन्होंने दो कार्य बहुत ही उत्तम सर्वहितकारी किये एक सत्यार्थ मार्ग जानने हेतु अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की और दूसरा कार्य मानव जीवन को सुखी व सत्यमार्गी बनाने के लिये संस्कार विधि अर्थात् जन्म से मृत्यु तक 16 संस्कारों को करने का विधान किया।

प्रत्येक मनुष्य की अपनी आत्मा श्रद्धा या आत्म गौरव की एक तोल होती है, यह तौल क्या हैं अपनी वाणी विचार और क्रिया के सत्य असत्य के विवेचन का वह एक माप है, जिसमें वह अपने सम्बन्ध की मान्यता को स्थित करता है। मनुष्य जितना सत्य से विमुख होगा उतना ही अपने आप में अश्रद्धालु बनता है। जिसने सत्य का परित्याग कर दिया समझो उसने अपने लिये सुख का मार्ग अवरूद्ध कर दिया।

''सत्यमेव जयते नानृतम'' सत्य की जय होती है असत्य की नहीं, सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं है। आत्मा स्वयं शाश्वत सत्य है। सत्य सरल भी है और स्वाभाविक भी है। यदि तुच्छ अहंकार और स्वार्थमयता को प्रमुख न बनाया जाए तो सत्य तथ्य छिपाने की आवश्यकता ही न पड़े। सत्य की अभिव्यक्ति से ही जीवन की जटिलता का समाधान हो सकता है।

आत्मा के ऐश्वर्य और सत्य के शाश्वत स्वरूप को शाश्वत बनाऐ रखने के लिये, सत्य बोलना, सत्य पर चलना, ऋत सत्य पर आधारित मान्यताओं को मानना ही जीवन का अर्थात् जीव का प्रमुख कृत्य है। सत्य धारी को ईश्वर को ढूंढने जाने के लिए भटकने की आवश्यकता नहीं है वह आत्मा में ही ईश्वरीय दर्शन का आनन्द लेता है। सत्य जीवन की मधुरता है जीवन की पूर्णता है।

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।

जाके हृदय सांच है ताके हृदय आप-।।

हम असत्य को सत्य अस्थिर परिवर्तनशील को अपरिर्वतन शील, क्षण क्षंगुर को सनातन और प्रतीतो के प्रति जागे हुए है और प्राप्त के प्रति सोए हुए है। असत्य के प्रति जागे हुए है और सत्य के प्रति सोये हुए है। जीवन का लक्ष्य सत्य जानना है। हमारा जीवन असत्य में बीत रहा है, हम चारों और से असत्य से घिरे हुए है। क्योंकि ऋत सत्य सर्वव्यापक है और निकटतम होने के कारण अदृश्य है। सत्य हमारे जन्म से पहले भी था और हमारी मृत्यु के बाद भी रहेगा, इसलिए हमारी खोज का विषय ऋत सत्य ही होना चाहिए।

सत्य असत्य के मूलगत भेद क्या है।

विश्व ऋत सत्य के आधार पर टिका हुआ है। असत्य वस्तु असत्य विचार, असत्य संस्था के भीतर उसके तोड़ने वाले तत्व रहते है, इसी को अर्न्तद्वन्द कहते हैं। असत्य के पेट में पड़ा जो अन्दर का विरोध है, वह सत्य को धीरे-धीरे फोड़ता जाता है और असत्य के भीतर सत्य अपने पैने पन से उभर आता है। क्योंकि सत्य दुविधा रहित व द्वेष रहित होता है। जहां भीतर सत्य और असत्य होंगे वहीं तो संघर्ष होगा। हमने जितनी भी संस्थाऐं व धर्म सम्प्रदाय बनाऐ है उनका प्रमुख लक्ष्य सत्य को लूटना है। कोर्ट में वकील सत्य को लूटने के लिये ही तो लड़ते है और जज का कार्य सत्य असत्य को ढूंड निकालना है। तभी वेदों ने कहा है सारा संसार ऋत सत्य पर टिका हुआ है।

निष्कर्ष

वेद उपनिषद, दर्शन शास्त्र, ब्रह्मण ग्रन्थ तथा जो वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थ है उसमें वर्णित शिक्षा और संसार में सत्यवादी सत्यपथ गामी युग पुरूषों ने सत्य को जाना और प्रचार करते-करते अपने जीवनों की आहूति दे दी। यदि संसार के सभी धर्म सम्प्रदाय संगठन सत्य और ऋत सत्य पर व्यवहारिक चलने का आवाहन करे तो, मानव समाज में तमाम अन्ध-विश्वास रूढ़ी वादिता उग्रवाद हिंसा द्वेष, समाप्त हो जायेंगे। जिस दिन हम सत्य और ऋत सत्य को समझ जायेंगे और तदानुकुल व्यवहार करने लगेंगे बस उसी दिन से हम ईश्वर को समझ सकेंगे और तब हम किसी भी जगह खड़े होंगे तो यही कहेंगे सत्यमेव जयते नानृतम।

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/-रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/-रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें।आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

क्रोध नियंत्रण

ले. -नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' 602 जी एच 53 सैक्टर 20, पंचकूला मो. 09467608686, 01724001895

किसी भी बीमारी के इलाज के लिए सबसे पहले उसके होने के कारणों को जानकर उन्हें दूर करना सबसे ज्यादा जरूरी होता है। आज के इस गलाकाट प्रतियोगिता वाले भौतिकवादी युग में तनाव के कारण उत्पन्न क्रोध पर नियंत्रण अत्यंत आवश्यक है। हमारे जीवन में उत्पन्न होने वाली प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण तनाव और क्रोध पैदा होते हैं। क्रोध की अग्नि में क्रोध करने वाला व्यक्ति स्वयं जल कर भस्म हो जाता है। हम जिस पर क्रोध करते हैं उसे नुकसान पहुँचाने की कोशिश और इच्छा के बावजूद हम उसकी कोई हानि शायद ना कर पायें लेकिन अपनी हानि अवश्य कर बैठते हैं। क्रोध की अवस्था में हमारा मस्तिष्क पूरी तरह कार्य नहीं कर पाता और हम उचित अनुचित का निर्णय नहीं ले पाते। इसीलिए क्रोध और तनाव की इस स्थिति से बचने के उपाय जानना जीवन में प्रगति के लिए अत्यंत आवश्यक है।

*** हम अपनी इच्छाओं को कम करके उन्हें नियंत्रण में रखते हुए प्रतिकूल परिस्थितियों से बचकर तनाव और क्रोध पर नियंत्रण रख सकते हैं।** मन की किसी इच्छा के पूरा ना होने पर पैदा होने वाली प्रतिकूल परिस्थिति में क्रोध और तनाव स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है।

हम वेद को ईश्वरीय ज्ञान माने और वेद की आज्ञा मा क्रुध:। क्रोध ना करने का संकल्प लें और फिर क्रोध ना करने के संकल्प को पूरा करने का पूर्ण पुरूषार्थ करते रहें। हम यदि मन में दृढ़ निश्चय कर लें कि मुझे क्रोध नहीं करना है तो निश्चित रूप से क्रोध और तनाव की किसी भी परिस्थिति से बच सकते हैं।

* कोई भी कार्य असंभव नहीं है और प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व हम यदि मन में उसके गुण दोषों पर विचार करके केवल सर्वहितकारी परोपकार के यज्ञीय कार्यों को करेंगे और अपने पूर्ण पुरूषार्थ के उपरांत सर्वशक्तिमान ईश्वर वा अन्य सहयोगियों से सहायता की प्रार्थना करेंगे तो निश्चित रूप से उन कार्यों को सफलता पूर्वक पूरा कर पायेंगे इससे किसी भी कार्य में कोई प्रतिकूल परिस्थिति उत्पन्न नहीं होगी और ना ही तनाव या क्रोध पैदा होगा।

* हम स्वार्थ की भावना का त्याग करके क्रोध को समाप्त कर सकते हैं। क्योंकि स्वार्थ के वशीभूत किए जाने वाले कार्यों में दूसरों का अहित होने की संभावना होती है और उनके प्रतिरोध से प्रतिकूल परिस्थितियों क्रोध तनाव आदि उत्पन्न होते हैं।

* जैसी संगत वैसी रंगत हम दैनिक जीवन में यथासंभव शांत प्रकृति के विद्वानों के साथ रहेंगे तो क्रोध को दूर रख पायेंगे यदि हम क्रोधी असंयमी स्वार्थी लोगों के साथ रहेंगे तो यह अवगुण जाने अनजाने हमारे अंदर भी आ जायेंगे।

* जैसा व्यवहार हम दूसरों से अपने लिए चाहते हैं वैसा व्यवहार हम खुद दूसरों के साथ करें अर्थात हम सभी से यथायोग्य स्वआत्मवत व्यवहार करें तो जीवन में सभी से प्रेम से परिपूर्ण अच्छा व्यवहार पायेंगे और तनाव क्रोध जैसी स्थिति से बचे रहेंगे।

* जैसा अन्न वैसा मन भोजन का हमारे जीवन पर बहुत प्रभाव पड़ता है इसलिए तेज मिर्च मसाले, मांसाहारी, अण्डे, शराब आदि तामसिक भोजन का सर्वथा परित्याग करके हम यदि सात्विक अन्न, दूध-दही शाकाहारी भोजन ग्रहण करेंगे तो निश्चित रूप से उसका प्रभाव हमारे मन पर पड़ेगा और हम क्रोध जैसी बुराई को अपने जीवन से निकाल पायेंगे।

* मौन रहने का अभ्यास क्रोध को दूर रखने में अत्यंत सहायक होता है अतएव प्रतिदिन दैनिक संध्या आदि के उपरांत मौन साधना अवश्य करें।

* प्रतिदिन ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना करते समय हम गायत्री महामंत्र का जाप करते हुए **धियो यो न: प्रचोदयात्** पर विशेष बल दें और ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रेरित करे और क्रोध आदि व्यसनों को हमसे दूर रखे।

* यदि किसी प्रतिकूल परिस्थिति में क्रोध उत्पन्न होने की संभावना हो तो बलपूर्वक शांत एवं मौन रहने का प्रयास करें और यदि अपना पक्ष रखना पड़े तो अपने सत्य पक्ष को पूरी दृढ़ता के साथ लेकिन अत्यंत संयम और मर्यादित ढंग से रखें।

* किसी प्रतिकूल परिस्थिति में क्रोध उत्पन्न होने पर तुरंत प्रतिक्रिया देने से बचें और थोड़ी देर विलंब करके ठंडा पानी पीकर ईश्वर का ध्यान करते हुए मौन रहकर मन के शांत होने की प्रतीक्षा करें।

* यदि कभी क्रोध कर बैठे तो मौन समाधि लगाकर ईश्वर का ध्यान करते हुए "मैं फिर कभी क्रोध नहीं करूंगा" ऐसा संकल्प लेकर प्रायश्चित अवश्य करें।

इन बातों को यथासंभव याद रखें, दोहरायें और क्रोध और तनाव को जीवन से दूर रखकर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करें।

वैद्य वैणीप्रसाद शास्त्री नहीं रहे

आर्य समाज के प्रति समर्पित एवं सुप्रसिद्ध वैद्य वैणीप्रसाद शास्त्री जी का 25 मई को लुधियाना में देहान्त हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया। वैद्य वैणी प्रसाद जी एक अच्छे और सुयोग्य वैद्य होने के साथ-साथ आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे। आज से पैंतीस वर्ष पूर्व लुधियाना के टैगोर नगर में आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज सिविल लाईन टैगोर नगर के माध्यम से वर्ष में तीन-चार बार सत्संगों का आयोजन करते थे। अनेक गुरूकुलों एवं वेद प्रचार करने वाली संस्थाओं को दान भेजा करते थे। वैद्य जी की वेदों के प्रति अत्यन्त श्रद्धा थी। वेद प्रचार के कार्यों में हमेशा बढ़-चढ़ कर सहयोग दिया करते थे। ऐसी महान् विभूति का इस संसार से जाना आर्य समाज की अत्यधिक क्षति है। परमपिता परमात्मा उस दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करके अपने चरणों में स्थान दे। उनकी आत्मिक शान्ति के लिए 4 जून को अन्तिम शोक सभा का आयोजन किया गया जिसमें शहर के गणमान्य लोगों ने वैद्य वैणीप्रसाद जी को अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस अवसर पर जिला आर्य सभा के महामन्त्री श्री विजय सरीन, आर्य समाज दाल बाजार के प्रधान श्री सतपाल नारंग, श्री श्रवण बत्रा, श्री हर्ष सूद, पं. राजेन्द्र शास्त्री, श्री महेन्द्र बस्सी तथा लुधियाना की सभी समाजों के अधिकारी मौजूद थे।

सुरेन्द्र शास्त्री आर्य समाज टैगोर नगर लुधियाना

मेधावी छात्रों को सम्मानित किया गया

आर्य गर्ल्ज़ सी० सकै० स्कूल, बठिण्ड़ा के प्रांगण में दिनाँक 31-5-17 दिन बुधवार को हवन यज्ञ करवाया गया। इस अवसर पर स्कूल के प्रधान श्री अनिल अग्रवाल, उपप्रधान श्री सुरिन्द्र गर्ग, प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता, समूह स्टाफ एवम् बच्चे शामिल हुए। पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड की 10वीं की परीक्षा में प्रिया शेखकर पुत्री श्री उत्तम सिंह ने 95% अंक प्राप्त करके पहला स्थान हासिल किया। प्रिया शेखकर पढ़ाई के साथ-साथ खेलों में भी हमेशा आगे रहती है। प्रिया पुत्री श्री अनिरूद गुप्ता 88% अंक प्राप्त कर द्वितीय और इन्द्रप्रीत कौर पुत्री श्री बलवीर सिंह 87.4% अंक लेकर तृतीय स्थान पर रहीं। 10वीं कक्षा में गणित और विज्ञान में सबसे अधिक अंक प्राप्त करने वाली छात्रा प्रिया शेखकर को रिटायर्ड अध्यापिका श्रीमती अरूणा अरोड़ा भी और गणित की अध्यापिका श्रीमती सुरिन्द्रपाल जी ने 1000/- -1000/- रूपये नकद राशि देकर सम्मानित किया। श्रीमती अरूणा अरोड़ा जी यह इनाम हर साल कल्पना चावला की याद में देते है। श्रीमती सुरिन्द्रपाल जी अपने विषय गणित को बढ़ावा देने के लिए हर साल बच्चों को इनाम देते हैं। +2 कॉमर्स में अर्शदीप पुत्री श्री शमिन्द्र सिंह ने 91% अंक प्राप्त करके पहला स्थान प्राप्त किया। नासरीन खातून और सपना ने द्वितीय तथा तृतीय स्थान प्राप्त किया। +2 आर्टस में कंचन पुत्री श्री मनोज कुमार कृष्णा पुत्री श्री संजय कुमार दीपिका पुत्री श्री धर्मपाल ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया। स्कूल के प्रधान, उपप्रधान, प्रिंसीपल तथा समूह स्टाफ ने होनहार छात्राओं को शाबाशी दी और बच्चों को इनाम देकर सम्मानित किया गया। प्रिंसीपल श्रीमती सुषमा मेहता जी ने रिटार्यड अध्यापिकाओं का अपने विषयों के सम्बन्धी बच्चों को बढ़ावा देने के लिए धन्यवाद किया।

-प्रिंसीपल आर्य गर्ल्ज़ सी. सै० स्कूल बठिण्डा

प्रेम भारद्वाज लगातार 24वीं बार बने आर्य समाज नवांशहर के प्रधान

आर्य समाज घास मंडी नवांशहर का वार्षिक अधिवेशन रविवार 4 जून 2017 को हुआ जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज को 24वीं बार सर्वसम्मति से प्रधान पद के लिये चयनित किया गया। चुनाव अधिकारी सुरेन्द्र मोहन तेजपाल की देखरेख में हुई चुनाव प्रक्रिया के दौरान ललित मोहन पाठक, अक्षय तेजपाल, जिया लाल शर्मा ने प्रधान पद के लिये श्री प्रेम भारद्वासज जी के नाम का प्रस्ताव रखा जिसका अनुमोदन श्री वरिन्द्र सरीन व अरविन्द तेजपाल ने किया।

आर्य समाज घास मंडी नवांशहर के नवनियुक्त प्रधान प्रेम भारद्वाज समूह सदस्यों के साथ संयुक्त चित्र में।

दूसरा अन्य कोई नाम न आने पर श्री प्रेम भारद्वाज जी को प्रधान पद के लिये चुन लिया गया। समूचे हाउस ने अपनी टीम के गठन का अधिकार भी नवनियुक्त प्रधान को सौंपे। इससे पूर्व आर्य समाज घास मंडी नवांशहर के मंत्री श्री जिया लाल शर्मा ने बीते वर्ष की गतिविधियों की जानकारी दी। कोषाध्यक्ष कुलवन्त शर्मा ने पूरे वर्ष का लेखा जोखा प्रस्तुत किया। नव नियुक्त प्रधान श्री प्रेम भारद्वाज जी ने समूचे हाउस का आभार व्यक्त करते हुये आर्य समाज का समाज के उत्थान में दिये जा रहे योगदान का उल्लेख किया। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि आज आर्य समाज की पहले से ज्यादा जरूरत है। उन्होंने बताया कि पिछले दिनों हमारे देश में कुछ ऐसी जघन्य घटनाएं हुई है जिससे हमारे देश का सिर झुक गया है। जिस देश में गाय को माता का दर्जा दिया जाता है उसी देश में गाय की निर्मम हत्या हमारी संस्कृति के ऊपर कलंक है। उन्होंने बताया कि अंग्रेजों के शासनकाल में हुये 1857 की क्रान्ति का एक मुख्य कारण यह भी था कि हमारे सैनिकों ने गाय की चर्बी लगे कारतूसों का इस्तेमाल करने से मना कर दिया और विद्रोह कर दिया था। आज स्वतंत्र भारत में हुई इस अमानवीय घटना ने हमारी संस्कृति और राष्ट्र का सिर शर्म से झुका दिया है। सरकार को चाहिये कि ऐसे देशद्रोही, संस्कृति के घातक दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दे ताकि भविष्य में इस प्रकार की कोई जघन्य घटना न हो। इसलिये आज आर्य समाज को भी पहले से जागरूक होने की आवश्यकता है। इस अवसर पर श्री विनोद भारद्वाज, डा. ए.के. राजपाल, मीना भारद्वाज, एडवोकेट देशबन्धु भल्ला, कुलवन्त शर्मा, वरिन्द्र सरीन, ललित मोहन पाठक, कुलवन्त शर्मा, अजय सरीन, पंकज तेजपाल, मनोज अरोडा, अक्षय तेजपाल, सुरेश गौतम, विकास तेजी, विपिन तनेजा, प्रो.एस.के. बरूटा, ललित शर्मा, बब्बू नैय्यर, नीरू नारद तथा अरविन्द नारद उपस्थित थे।

आर्य समाज चौक पटियाला का वार्षिक चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर, आर्य समाज चौंक पटियाला का वार्षिक चुनाव प्रो विद्या सागर जी की अध्यक्षता में दिनांक 4 जून 2017 रविवार को सुबह 10.15 बजे सम्पन्न हुआ जिसमें श्री राज कुमार सिंगला को लगातार चौथी बार सर्वसम्मति से आर्य समाज चौक पटियाला का प्रधान चुना गया और इसके साथ साथ उन्हें अपनी कार्यकारिणी सभा नियुक्त करने का अधिकार भी दिया गया। चुनाव में समाज के पदाधिकारियों एवं सभी सदस्यों ने भाग लिया। प्रधान चुने जाने पर सभी का धन्यवाद करते हुये श्री सिंगला ने अपने सम्बोधन में कहा कि आर्य समाज अपने आप में समाज सेवा, कर्त्तव्यनिष्ठा व समर्पण भावना का सूचक है। उन्होंने कहा कि आप ने मुझे समाज की सेवा का जो सुअवसर प्रदान किया है मैं उसे पूरा करने का प्रयास करूंगा और अपने सभी सहयोगियों को साथ लेकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के बताये मार्ग के अनुसार समाज के जरूरतमंद लोगों की सहायता करते हुये समाज के कार्यों को आगे बढाउंगा।

आर्य समाज, आर्य समाज चौंक पटियाला के सदस्यों के साथ नव निर्वाचित प्रधान श्री राज कुमार सिंगला। श्री सिंगला चौथी बार प्रधान चुने गये।

इस अवसर पर वीरेन्द्र सिंगला, बिजेन्द्र शास्त्री, वेद प्रकाश तुली, जितेन्द्र शर्मा, आनन्द मोहन सेठी, यशपाल सिंगला, निखिल मंडल, हर्ष वर्धन वधवा, भूपिन्द्र राय, शैलेन्द्र मेहरा, ओम देव आर्य, के.के. मोदगिल, रमेश गंडोत्रार, मोहन लाल, बैजनाथ, यशपाल जुनेजा, संगीता सिंगला, सुमन लता एवं प्रेम लता आदि अनेक गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।